Mantra Sadhana Experiences

मंत्र सिद्धि अनुभव

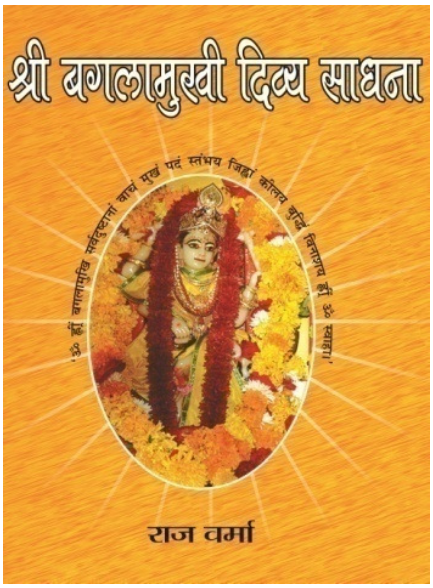

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

मंत्र के महत्त्वपूर्ण अंग

ऋषिः— **जिस ऋषि ने मंत्र को शिवमुख से सुनकर उसे सिद्ध किया वही उसका प्रणेता एवं संचालक गुरु होता है। इसलिये विनियोग में उनका नाम लेने से उन ऋषि की सहायता प्राप्त होती है। ऋषि को गुरू मानकर तीन बार प्रणाम करके शिर पर धारण किया जाता है।**

देवताः— **देवता के प्रभाव से ही मंत्र में शक्ति एवं ऊर्जा का संचालन होता है। देवता को न्यास के द्वारा हृदयस्थल में स्थापित किया जाता है।**

छन्दः— **छन्द से मंत्र की प्रक्रिया, शक्ति एवं विभाग का ज्ञान होता है। विनियोग में छन्द का न्यास मुख में किया जाता है।**

बीजः— **मंत्र का बीज देवता की शक्ति का सूक्ष्म अंग है। बीज ही वृक्ष की प्रारम्भिक अवस्था होती है। विनियोग मे इसका न्यास गुह्यस्थान में किया जाता है।**

कीलकः— **शरीर के केन्द्र बिन्दु नाभिस्थल में इसका न्यास किया जाता है।**

शक्तिः— **मंत्र की शक्ति का न्यास पैरों में किया जाता है।**

विनियोगः— **कामना की सिद्धि के उच्चारण के साथ सम्पूर्ण शरीर में न्यास हेतु अन्त में विनियोग किया जाता है।**

षडंगन्यास में छः प्रकार से हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र एवं अस्त्राय के माध्यम से शरीर का स्पर्श करते हुए शरीर में देवता को भावित कर साधनारम्भ की जाती है जिससे शरीर देवमय हो जाता है। पंचांगन्यास में नेत्र को छोड़कर सब जगह न्यास किया जाता है।

मंत्र सिद्धि विचार

अनुष्ठानकाल में देवता स्वप्न में या प्रत्यक्ष रूप से साधक को कार्य सिद्धि-असिद्धि एवं अपनी सत्ता के कुछ ना कुछ अनुभव अवश्य कराते हैं। जिससे साधक की देवता के प्रति श्रद्धा एवं भक्ति जाग्रत हो। जिन्हें स्वप्न में देवता या अन्य शुभ दर्शन न हो तो उन्हें समझना चाहिये कि उनके प्रारब्ध में पापकर्मों की अधिकता है या उनकी आस्था या नित्यकर्म में कोई दोष है। भगवती की इच्छा से ही साधक उनकी क्रियाशक्ति और उपस्थिति का साक्षात्कार करता है। कुछ

दिव्य स्वप्न एवं अनुभव मेरे एवं मेरे शिष्यों द्वारा अनुभवित किये गये हैं। जिन्हें साधकजनों के समक्ष प्रस्तुत कर रहां हूं।

- सबसे उत्तम, अनुष्ठान काल के समय स्वप्न में देवता के प्रसन्नचित्त मुद्रा में दर्शन होना है। दर्शन जितने भव्य, विराट एवं अधिक होगें उतना ही शुभ परिणाम होगा। देवता के स्वप्न में जितने अधिक दर्शन होंगे उतना ही अधिक लाभ होगा। देवता के साथ यदि अपने गुरुदेव के दर्शन भी हो तो समझना चाहिये कि आपके गुरु एक विशिष्ट साधक हैं और आपके गुरु पर देवता की विशेष कृपा है।

- पूजन करते समय देवता के समक्ष रखी पूजन सामग्री जैसे-फल, फूल, नैवेद्य या अन्य सामग्री अनेंको बार खिसक कर नीचे गिर जाये तो यह देवता की प्रसन्नता के संकेत हैं, परन्तु मनोवांछित कार्य भी पूर्ण रूप से सिद्ध हो यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि देवता प्रसन्न होते हुए भी साधक को उसकी साधना का फल सृष्टि के नियमानुसार ही प्रदान करते हैं। इस अनुभूति में कार्य शीघ्र पूर्ण हो, विलम्ब से पूर्ण हो या कदापि पूर्ण न हो, यह सब दैवीय इच्छा पर निर्भर करता है। सम्भवतः इस संकेतों द्वारा देवता मनुष्य के प्रति स्नेह एवं सहानुभूति प्रकट करते हुए मनुष्य को साधनामार्ग पर चलने के लिये प्रेरित करते हैं। कई लोग इस प्रकरण को कार्य सिद्धि का लक्षण कहते हैं, परन्तु मेरा स्वयं अनुभव ऐसा नही है।

- कई भाग्यशाली साधकों को कुछ समय पश्चात् स्वप्न में ही देवता से भविष्यत्व मंत्र प्राप्त हो जाते हैं। यह भी देवता की कृपा दृष्टि के संकेत हैं। इसके कई महत्वपूर्ण कारण हो सकते हैं। जैसे-साधक के पूर्व जन्म में साधना संस्कार प्रबल होना, वर्तमान काल में कठोर जप करना या विशिष्ट गुरु द्वारा मंत्र ग्रहण करनादि। स्वप्न में मंत्र, स्वयं देवता या गुरु मुख से प्राप्त हो सकता हैं। इसके अतिरिक्त मंत्र स्पष्ट रूप से सुनाई या दिखाई दे सकता है। स्वप्न प्राप्त मंत्र परम सिद्धिदायक होते हैं। 'रुद्रयामलतंत्र' में लिखा है– 'कि यदि महागुरू के स्थान पर स्वप्न में कोई मंत्र प्राप्त हो जाये तो वह महान चमत्कारी होता है और हृदय में प्रसन्नता बढ़ाता है। स्वप्नोंपलब्ध मंत्र चाहे अरिमंत्र ही क्यों न हो महापुण्य दायक होता है और सभी उत्तमोत्म मंत्रों से भी श्रेष्ठ है।'

- मंत्र स्वतः ही जिह्वा पर चलायमान होने लगे या मन ही मन सर्वकाल स्वतः ही मंत्र का चिन्तन होने लगे, जपकाल के समय अपना शरीर वायु के समान हल्का व सूक्ष्म हो जाये। जैसे- अपने शरीर के भार का आभास ही न हो। ये अवस्थायें भी देवता की कृपा प्राप्ति

एवं मंत्रसिद्धि के संकेत हैं। इसके अतिरिक्त मन में शान्ति, प्रसन्नता एवं आनन्द का अनुभव होना भी शुभकारी होता है।

- स्वप्न में स्वच्छ मक्खन, मिठाई, फल, फूल, दही या मलाई देखना अथवा खाना शुभकारी होता है।
- स्वप्न में समुद्र या विशाल नदी के स्वच्छ जल में स्नान करना शुभकारी है। हवा में ऊपर की ओर उड़ना भी शुभ स्वप्न है दूसरों को उड़ते देखना अशुभ है।
- स्वप्न में अपने पितरों के शान्त स्वरूप में दर्शन होना भी शुभफल प्रदान करता है।
- स्वप्न में देवता की किसी भी प्रकार से पूजार्चना करना जैसे–देवता को तिलक करना, उनके समक्ष दीपक प्रज्जवलित करना पुष्प माला पहनाना, अपना मंत्र जप करना या सौम्य रूप में देवता के दर्शन होना शुभफल प्रदान करता है। क्रोधावस्था में दर्शन होना साधक से कोई भूल होना दर्शाता है।
- स्वप्न में जटानारियल का पानी पीना या पान खाना अति उत्तम है।
- स्वप्न में देवता तो धुंधली छवि में दिखे, परन्तु उनके साथ उनका कोई अस्त्र स्पष्ट दिखाई दे तो अशुभ है।
- स्वप्न में किसी सुन्दर श्वेत वस्त्र एवं तेजयुक्त स्त्री अप्सरा या परी जैसी छवि के दर्शन होना शुभ फल प्रदान करता है। किसी भी देवता पूजन में ये स्वप्न शुभ फल प्रदान करते है।

बगलामुखी साधना सिद्धि प्रमुख स्वप्नः–

- पीताम्बरा अनुष्ठान काल में साधक को स्वप्न में खिले हुए पीतपुष्प या पुष्प की माला दिखाई देना शुभ है।
- पीले रंग का शर्बत (पेय–पदार्थ) आदि दिखाई देना या शर्बत को पीना शुभ लक्षण है।
- पीला स्वादिष्ट हलुवा देखना या खाना शुभ अत्यन्त शुभ लक्षण है।
- यदि स्वप्न में पीला मेंढक कूदता हुआ दिखाई दे तो विशेष सिद्धि प्राप्ति होती है।

✳ स्वप्न में पीतवस्त्र धारित प्रसन्नचित्त कन्या या स्त्री के दर्शन होना भगवती की प्रसन्नता का प्रतीक है। स्वयं पीतवस्त्र धारण किये दिखना भी शुभ स्वप्न है। मेरे अनुभव से पीताम्बरा साधना में अधिकतर पीतवस्त्र धारित स्त्री, कन्या, हरिद्रागणेश अथवा किसी पण्डित के माध्यम से ही मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

✳ श्रीबगला सिद्ध पीठ के दर्शन हो यह स्वप्न माँ बगला की प्रसन्नता का चिन्ह है और शीघ्र कार्य सिद्धि का प्रमुख लक्षण है। अन्य प्रकार के दृश्य भी स्वप्न में दिख सकते हैं जिसका साधक स्वयं अनुभव करता है।

'मंत्रमहोदधि' में कहा गया है कि उपदेश के सामर्थ्य से, गुरु की प्रसन्नता से, मंत्र के प्रभाव से तथा भक्ति से मंत्र की सिद्धि होती है। 'मंत्रसिद्धि भण्डागार' में कहा गया है कि हमारा मंत्र फलीभूत होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास मंत्रसिद्धि का लक्षण है। दूसरा श्रद्धा से युक्त होना, तीसरा गुरु का पूजन करना, चौथा समता भाव, पाँचवां पाँचों इन्द्रियों का निग्रह तथा छठा प्रतिमाहार इनके अतिरिक्त कोई सिद्धि का लक्षण नहीं है।

'वक्रतुण्ड-कल्प' में कहा गया है– चित्त की प्रसन्नता, मन की संतुष्टि, अल्पभोजन, निद्रानाश, स्वप्न में जलाशय या पके हुए फलों का दर्शन शीघ्र ही मंत्रसिद्धि के चिह्न होते हैं। 'भैरवीतंत्र' में कहा है– मंत्रसिद्धि होने पर साधक सर्वत्र प्रकाश देखता है अथवा उसका शरीर प्रकाशयुक्त हो जाता है अथवा निज शरीर देवतामय हो जाता है।

अन्यतंत्र में कहा है– मंत्र की साधना करने वाले साधक के लिये प्रथम तीन वर्ष निश्चित रुप से बहुत विघ्नमय होते हैं। यदि साधक में कर्म, मन और वचन से उद्वेग न हो तो तीसरे वर्ष के बाद मंत्रराज स्वयं सिद्ध हो जाता है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana